International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 653-655

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 653-655
www.allresearchjournal.com
Received: 26-06-2015
Accepted: 28-07-2015

रोशन कुमार
(शोधार्थी), हिन्दी विभाग, बाबासाहेब बीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

Correspondence
रोशन कुमार
(शोधार्थी), हिन्दी विभाग, बाबासाहेब बीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

हिन्दी बाल साहित्य : उद्भव एव विकास

रोशन कुमार

सांराश – बालकों की रूचियों, कल्पनाओं, बौद्धिक क्षमताओं, उनकी सूझ-बूझ, उनका परिवेश, उनकी मानसिकता आदि को केंद्र में रखकर लिखा गया साहित्य 'बाल साहित्य' माना जाता है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में अमीर खुसरों ने बच्चों के लिए मुकरियों, पहेलियाँ, सरल दोहे आदि की रचना की। वास्तविक रूप से बाल साहित्य का अर्भिभाव भारतेन्दु युग मे हुआ। 1882 में प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'बाल दर्पण' प्रथम बाल पत्रिका है। बाल पत्रिका 'नंदन' के पूर्व संपादक जयप्रकाश भारती ने सन् 1623 में जटमल द्वारा लिखित 'गोरा बादल की कथा' को बाल साहित्य का आदि पुस्तक माना है। द्विवेदी युग में बाल साहित्य की दृष्टिकोण से उल्लेखनीय काम हुए। अनेक धार्मिक ग्रंथों का बाल संस्करण प्रकाशित हुए- बाल भागवत, बाल रामायण, बाल महाभारत आदि। द्विवेदी युग के बाद हिन्दी बाल साहित्य में राष्ट्रीय जागरण की शंखनाद सुनाई दिया। वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति भी इसी समय बाल साहित्य में प्रविष्ट हुई।

बालकों की रूचियों, कल्पनाओं, बौद्धिक क्षमताओं, उनकी सूझ-बूझ, उनका परिवेश, उनकी मानसिकता आदि को केंद्र में रखकर लिखा गया साहित्य 'बाल साहित्य' माना जाता है। बाल साहित्य तीन अर्थों में प्रयुक्त होता है - (क) बालकों के लिए लिखा गया साहित्य (ख) बालकों द्वारा लिखा गया साहित्य (ग) बालकों के सम्बन्ध में लिखा गया साहित्य। डॉ. श्री प्रसाद के शब्दों में " वह समस्त साहित्य जिसमें बाल-साहित्य के तत्व हैं अथवा जिसे बालकों ने पसंद किया है भले ही जिसकी रचना मूलत: बालकों के लिए न हुई हो बाल-साहित्य है। [1]" निरंकार देवसेवक के अनुसार – "जिस साहित्य से बच्चों का मनोरंजन हो सके, जिसमें वे रस ले सके और जिसके द्वारा वे अपनी भावनाओं और कल्पनाओं का विकास कर सकें वहीं बाल-साहित्य है। [2] "

हिंदी बाल साहित्य की एक समृद्ध परम्परा है। पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर, जातक कथा एवं अन्यान्य संस्कृत कथा साहित्य की गौरवशाली धरोहर इसे है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में अमीर खुसरों ने बच्चों के लिए मुकरियों, पहेलियाँ, सरल दोहे आदि की रचना की। भक्तिकाल में सूरदास तथा तुलसीदास ने बाल पदों को अपने काव्य में स्थान दिया। महाकवि सूरदास अपने सूरसागर में श्रीकृष्ण के बाल – लीलाओं तथा तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस में सात खंड में से एक खंड बालकाण्ड ही लिखा।

वास्तविक रूप से बाल साहित्य का अर्भिभाव भारतेन्दु युग मे हुआ। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने हिन्दी बाल साहित्य का अभिर्भाव काल भारतेन्दु युग को सिद्ध करते हुए लिखा है, "भारतेन्दु युग में 1874 में 'बाल- बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन एक ऐसी ऐतिहासिक घटना है,जो प्रमाणित करती है कि बाल – वर्ग के लिए पृथक साहित्य (स्कूली किताबों के अलावा ज्ञान देनेवाला) लिखा जाना आवश्यक समझा गया था।....यद्यपि यह पत्रिका अधिक समय तक नहीं चली, तथापि इसने हिंदी में बाल साहित्य रचना को जन्म दिया। यही से विशुद्ध हिंदी बाल साहित्य का विकास आरंभ होता है। [3]" परंतु 'बाल बोधिनी' से बाल साहित्य का आरंभ नहीं हुआ। क्योंकि ये पत्रिका महिलाओं के लिए थी। बाल – बोधिनी बच्चों की पत्रिका न होकर स्त्रियों के कल्याण के लिए समर्पित पत्रिका थी। बाल-बोधिनी के मुख्य पृष्ठ पर स्पष्ट लिखा है लिखा है–"स्त्री जनों की प्यारी हिंदी भाषा में सुधारी"। इस वाक्य के नीचे एक पद्यात्मक पंक्ति भी छपी रहती थी " सीता अनुसूया सती अरूंधती अनुहारि, शील लाज विद्यादि गुण लहौ सकल जग नारि"। इससे स्पष्ट है कि 'बाल-बोधिनी' बच्चों की पत्रिका नहीं थी। 1882 में प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'बाल दर्पण' प्रथम बाल पत्रिका है। हिन्दी बाल साहित्य की पहली पुस्तक को लेकर विद्वानजन एक मत नहीं हैं। बाल पत्रिका 'नंदन' के पूर्व संपादक जयप्रकाश भारती

ने सन् 1623 में जटमल द्वारा लिखित 'गोरा बादल की कथा' को बाल साहित्य का आदि पुस्तक माना है। भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य के साथ ही हिंदी बाल साहित्य को भी एक नई दिशा दी। 'अंधेर नगरी चौपट राजा' तथा 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' 'लोरी' 'चूरन का लटका' उनकी प्रमुख रचनाएँ है। उन्होंने तत्कालीन लेखकों को भी बालसाहित्य लेखन के लिए प्रोत्साहित किया। प. बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, श्रीनिवास दास आदि इस युग के प्रमुख बाल साहित्यकार रहे है। प्रताप नारायण मिश्र की 'मोटापा' गोरसा हर-गंगे तथा श्रीनिवासदास का 'प्रह्लाद चरित्र' नाम से नाटक लिखा।

द्विवेदी युग मे बाल साहित्य की दृष्टिकोण से उल्लेखनीय काम हुए। महावीर प्रसाद द्विवेदीजी ने बच्चों के लिए स्वयं अधिक रचनाएँ नहीं लिखी, पर अन्य रचनाकारों को इसके लिए प्रेरणा प्रदान की। द्विवेदी जी ने 'बालविनोद' नामक पुस्तक लिखी। अनेक धार्मिक ग्रंथों का बाल संस्करण उन्हीं की प्रेरणा से प्रकाशित हुए- बाल भागवत्, बाल रामायण, बाल महाभारत आदि। जनवरी सन् 1917 में द्विवेदी जी की प्रेरणा से ही इंडियन प्रेस, इलाहाबाद द्वारा 'बालसखा' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। द्विवेदी युगीन बाल साहित्य अनेक बिषयों पर रची गई। कुछ कथात्मक, कुछ मनोरंजन प्रधान, कुछ राष्ट्रीयता तथा देश प्रेमपरक है। जीवनी विधा पर भी सन् 1929 में ठाकुर श्रीनाथ सिंह की 'दसकथाएँ' प्रकाशित हुई, जिसमें महापुरूषों की जीवनियों निबद्ध है। इस युग के प्रमुख बाल साहित्यकार है- बाल मुकुंद गुप्त, प. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', प. कामता प्रसाद गुरू, रामजी लाल शर्मा, प. सुखराम चौबे 'गुणाकर' सुखदेव प्रसाद चौबे, प. राम नरेश त्रिपाठी, ठाकुर श्रीनाथ सिंह, गोपालशरण सिंह आदि। द्विवेदी युग में हरिऔध जी का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अपनी बाल कविताओं में बड़ी सरल-सुबोध शैली का उपयोग किया है। सरल बाल भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति उनकी बालोपयोगी कविताओं की विशिष्टता है। उनके 'खेल तमाशा', 'चन्द्र खिलौना', 'बाल-विलास', 'फूल पत्ते' नाम से बच्चों की कविताओं के संकलन प्रकाशित हुए। कामता प्रसाद गुरू हिन्दी साहित्य में अपनी व्याकरण की पुस्तक के लिए प्रसिद्ध है। उनकी बाल कविताओं मे 'चिट्ठी वाला', 'रेलगाड़ी', 'तरूवर', 'बगीचा', 'हमारी छड़ी' आदि सर्वोत्कृष्ट रचनायें है। रामजी लाल शर्मा प्रारंभ से ही बाल साहित्य प्रेमी थे। इलाहाबाद से सन् 1914 में 'विद्यार्थी' एवं 1926 में 'खिलौना' मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। उनकी बाल रचनाओं मे 'बाल रामायण' 'बाल भागवत्' 'टके सेर भक्ति टके सेर लक्ष्मी' और 'बाल चरित्र माला' विशेष उल्लेखनीय है। रामनरेश त्रिपाठी के 'बाल कथा कहानी' के सत्रह भाग प्रकाशित हुए। त्रिपाठी जी ने 'पंचतंत्र' की कहानियों का पद्य अनुवाद भी किया।उनकी पद्य पुस्तकों में 'गुपचुप' 'मोहन लाल' 'बताओ तो जाने' 'वानर संगीत' 'हँसू की हिम्मत' आदि प्रमुख है।ठाकुर श्रीनाथ सिंह 'बालसखा' और 'शिशु' बाल मासिक पत्रिका के संपादक थे।इन्होने प्रयाग से दीदी और 'बालबोध' का प्रकाशन भी किया। इनकी बाल कविताएँ पिपहरी, 'खेलघर' 'बाल कवितावली' आदि पुस्तकों मे संग्रहीत है।

द्विवेदी युग के बाद हिन्दी बाल साहित्य में राष्ट्रीय जागरण की शंखनाद सुनाई दिया। वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति भी इसी समय बाल साहित्य में प्रविष्ट हुई। इस युग के प्रमुख लेखक है – प. लल्ली प्रसाद पांडेय, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, भगवती प्रसाद वाजपेयी, देवीलाल चतुर्वेदी, रामेश्वर गुरू 'कुमार हृदय', डॉ. राजेश्वर गुरू, प. केशव प्रसाद पाठक, प. रामदहिन मिश्र आदि। सोहन लाल द्विवेदी 'शिशु' तथा 'बाल सखा' के संपादक रहे। 'शिशु भारती', 'बाँसूरी', 'बिगूल', 'बच्चों के बापू', 'हँसो हँसाओं' आदि कविताओं के संग्रह है। आरसी प्रसाद सिंह हीरा मोती, चन्दामामा जादू की वंशी तथा रामकथा आदि पुस्तकें बच्चों के लिए लिखे। प. देवी दयाल चतुर्वेदी ने 'मीठे ताने', 'झिलमिल तारे', 'आल्हा उदल', 'मीठे गीत', 'हवा महल', आदि उल्लेखनीय है। इनकी पुस्तक 'बिजली' में दो वीर भारतीय नारियाँ 'रानी दुर्गावती' तथा 'कमला' की काव्य जीवनियाँ प्रस्तुत की गई है। स्वतंत्रता के पूर्व की इस अवधि में विषय एवं शैली की दृष्टि से बाल साहित्य पर्याप्त संपन्न बना। मनोरंजन के अतिरिक्त राष्ट्रीयता, बाल-मन, नैतिकता, प्रकृत्ति, वीरता-साहस जैसे विषय भी बाल साहित्य में जगह बनायी। कुमार हृदय ने हिंदी बाल साहित्य में प्रथम बार अभिनय गीतों का प्रवर्तन किया।

स्वतंत्र्योत्तर युग में बाल साहित्य की सभी विधाओं में राष्ट्रीयता की भावना का सफल प्रतिफलन हुआ। इतिहास और पुराण से जीवन मूल्यों की शिक्षा देनेवाले सारगर्भित बिषय चुने गए। पिछले युग के कुछ रचनाकार इस काल में भी सफलतापूर्वक साहित्य-साधना करते रहे। स्वतंत्र्योत्तर युग का बाल साहित्य सन् 1960 के बाद अपने भव्य कलेवर में दिखाई दिया। नर्मदा प्रसाद खरे की प्रथम रचना 'बासुरी' है।इनकी प्रमुख रचनाओं में 'वीरो री कहानियाँ', 'पूज्य चरण', 'मेरी भी सुनो', 'बाल नाटक', 'माला', 'धन्य ये बेटियाँ' प्रसिद्ध है। निरंकार देवसेवक बाल साहित्य के महत्वपूर्ण कवि है। इनकी 'रिमझिम' दूध जलेबी, धूप छाया, माखन-मिश्री, फूलों के गीत,आजादी के गीत, महापुरूषों के गीत आदि प्रमुख बाल गीतों की पुस्तकें है। श्री प्रसाद जी ने छोटी किंतु रोचक कविताएँ लिखी। इनकी प्रमुख रचनाओं में - मेरा साथी घोड़ा, खिड़की से सूरज, आ री कोयल, अक्कड़–बक्कड़ का नगर (बालकाव्य संग्रह) शिशुगीत, चिड़िया घर की सैर (शिशुगीत संग्रह), फूलों के गीत (शिशुगीत संग्रह), सीखो अक्षर गाओ गीत (शिशुगीत संग्रह), रेल की सीटी (बाल कहानी संग्रह), खरगोश के सींग (बाल कहानी संग्रह), रिक्शावाला (बाल कहानी संग्रह), ढम ढमाढम (बालकाव्य संग्रह), गीत विज्ञान के (बालकाव्य संग्रह), भारत गीत (बालकाव्य संग्रह), गुड़िया की शादी (बालकाव्य संग्रह), आंगन के फूल, गीत बचपन के, ताक धिना धिन, झिलमिल तारे, खेलो और गाओ (शिशुगीत), गीत गीत में गिनती, मीठे–मीठे गीत, अक्षर गीत, सीखो अक्षर गाओ गीत, शुभम बाल गीत, गाओ गीत पाओ सीख, गीत गीत में पहेलियाँ, जगमग, झिलमिल, गुनगुन, गीत भी पहेली भी हमारे गीत, पहेलियाँ, रूनझुन बाल कहानी संग्रह - रेल की सीटी, पिकनिक और अन्य कहानियाँ, आज री सुखनींदरिया नई राह, सर्कस और अन्य हास्य कहानियाँ, खरगोश के सींग, रिक्शावाला, मुनमुन के खिलौने, अपना घर,गाड़ी देर से आई, पाँच बाल कहानियाँ, कागज की नाव, नन्हीं गिलहरी, उनसठवाँ जन्मदिन, समय के पंख, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, बेताल पचीसी, मेरी प्रियबाल कहानियाँ है। राष्ट्रबंधु के लिखे बाल साहित्य - बाल भूषण, कंतक थैयाँ धुनूँ मनइयाँ, देश प्रेम के बालगीत, नाचो गाओ, मेरे प्रिय बालगीत, यह धरती बलिदान की, जय सियाराम, लाक्षागृह, हँसी के बालगीत, झुंझिया रानी टेसू राजा, तीस तितलियाँ, जादूगर से लगते बादल, टेसू जी की भारत यात्रा गंगा मैया की जय बोल, हमें नया आकाश चाहिए, अनोखा उपहार, विक्रमादित्य का सिंहासन, प्रयोगों की कहानी, जादूगर फास्टम, उत्तरप्रदेश की सैर, ये महान कैसे बने, हम साहसी बेटे हैं आदि है। विनोद चन्द्र पाण्डेय की प्रमुख रचनाएँ - कविता की फुलवारी (बाल गीत संग्रह), समय–समय के गीत (बाल गीत संग्रह), गीत बाल कल्याण के, बाल सहगान, गुरू भक्त आरूणि की कथा, विज्ञान गीत, पर्यावरण के गीत, शिक्षा के गीत, दानवरी शिवि, हिन्दी वन्दना आदि है। हरि कृष्ण 'तेलंग की रचनाएं-मेंढक की करामात, बकरी के जिद्दी बच्चे, अच्छे दोस्त बनाओ, नाम एक व्यक्ति अनेक, बात का बतंगढ़, कथाओं में नाचता मोर आदि है। डॉ. रोहिताश्व अस्थाना की रचनाएँ - आओ, गायें धूम मचाये, आओ बच्चो गाओ बच्चो, नन्हीं गजलें, आओ गयें गीत

रसीले, मोनू के गीत, भारत माँ के राजदुलारे, धूप गुन गुनाती हमें बुलाये, हँसते मुस्काते सपने, गीतमाला बालकथा, काफिले का सूरज, स्वप्नलोक, बच्चों की वापिसी, सोनू की उड़ान, भूत से टक्कर, सुनो कहानी, गुनो कहानी, बड़ो की बातें, कोयल की सीख है। इस तरह आठवें दशक तक बाल साहित्य सभी विधाओं में स्वतंत्र रूप से रचना होने लगी।

समकालीन बाल साहित्य से हमारा अभिप्राय सन् 1980 के बाद से आज तक के बाल साहित्य से है। समकालीन बाल साहित्य के लेखक में कुछ पुराने पीढ़ी के साहित्यकार जैसे श्रीप्रसाद, डॉ. राष्ट्रबंधु, हरिकृष्ण देवसरे है तो कुछ इस कालावधि में उभरने वाले लेखको में क्षमा शर्मा, रोहिताश्वर आस्थाना, रामसेवक शर्मा, कृष्ण शलभ आदि प्रमुख है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्री प्रसाद, हिन्दी बाल साहित्य पृ. -14
2. कुसुम डोभाल, हिन्दी बाल काव्य में प्रतीक एवं कल्पना तत्व, पृ. -31
3. कामना सिंह, स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी बाल साहित्य पृ.-22, 23